R.F.N

CYBERDEJAVU a.k.a MANAS

RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING THE JANOON BACK

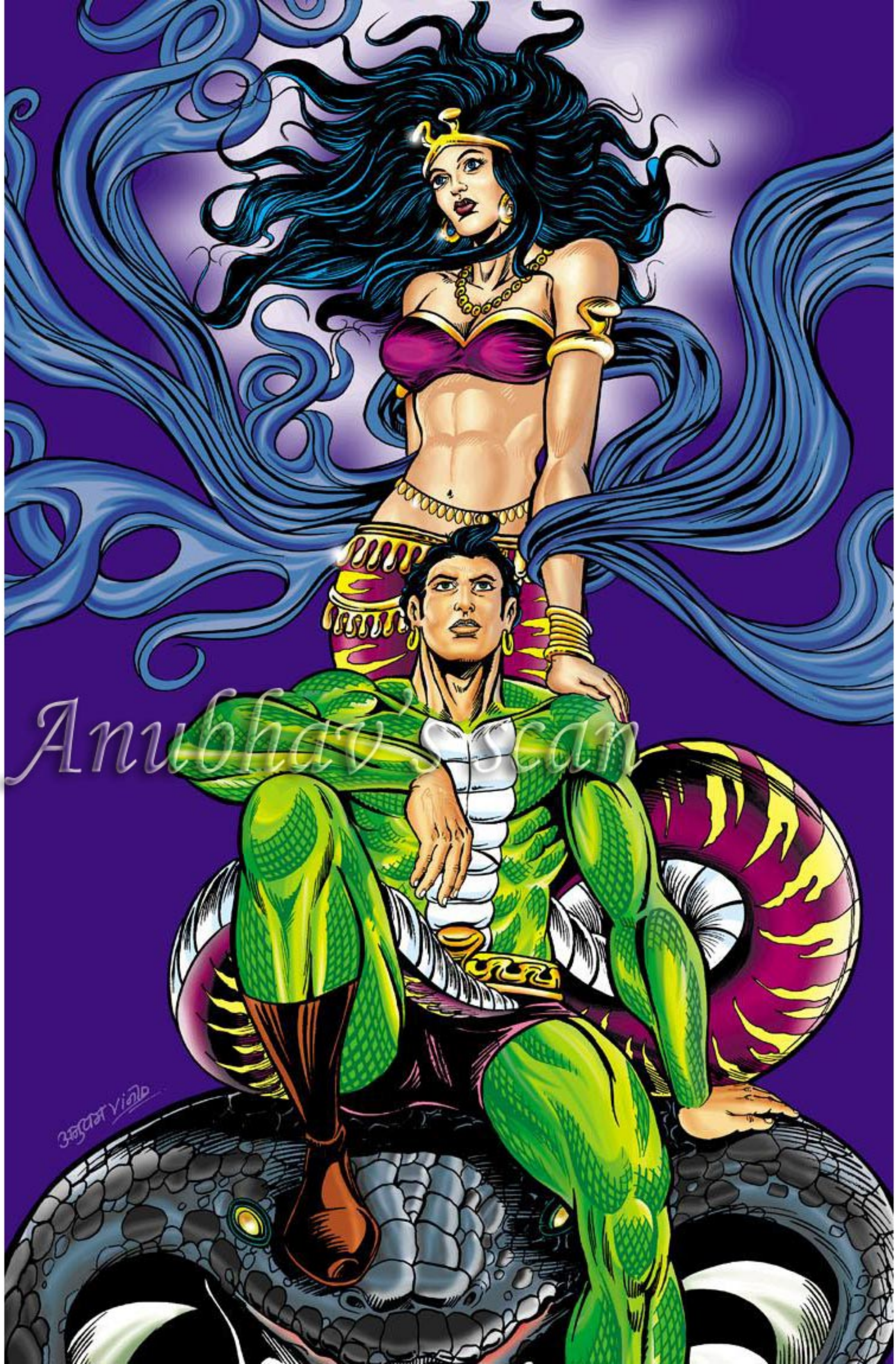
Anubhav Scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

बांकेलाल और जादूगर डांगा

चित्रांकन : बेदी

लेखक : पापिन्दर जुनेजा, सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त

एक रात उधमपुर का राजा उधमीसिंह अपने शयन कक्ष में बेचैनी के आलम में टहल रहा था—

ये बांके लाल ही मेरे रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट है। यदि वह न होता तो आज विशालगढ़ मेरे राज्याधीन होता...

...कम्बख्त ने कितनी होशियारी से युद्ध-भूमि में मेरी निश्चित विजय को न केवल पराजय में बदल दिया था, बल्कि मुझे मजबूर कर दिया था कि मैं आजीवन-संधि का प्रस्ताव विक्रमसिंह के पास भेजूं...

...काश! ये बांकेलाल एक बार मेरे हत्थे चढ़ जाए तो मैं इसकी बोटी-बोटी चबा डालूं। मुए ई मुई...

बांकेलाल और राजा उधमीसिंह के विषय में जानने के लिए राज कॉमिक्स का पूर्व प्रकाशित अंक 'कर बुरा, हो भला अवश्य पढ़ें।

Anubhav's scan

तभी उधमपुर के जाने-माने जासूस चौपट और पोपट ने राजा के शयनकक्ष में प्रवेश किया—

महाराज की जय हो।

??

बिना इजाजत इस समय आपके शयनकक्ष में प्रवेश करने के लिये क्षमा चाहते हुए आपसे निवेदन करते हैं...

... कि आप हमें वह कारण बताएं जिसकी वजह से आपकी रातों की नींद हराम हुई है।

हां, महाराज! कारण बताएं।

राज-जासूसो! तुम शायद कारण जान कर भी हमारी कोई मदद न कर सको इसलिए...

... बीच में बोलने की गुस्ताखी माफ, महाराज! लेकिन हम जासूसों के जासूस पोपट, चौपट आपको परेशान नहीं देख सकते।

जी महाराज, हम आप न देखें यह तो हो सकता है, लेकिन हम आपको इस तरह परेशान हाल नहीं देख सकते। हें हें-हें।

तो सुनो पोपट और चौपट, क्या तुम लोग बांकेलाल का अपहरण करके उसे यहां ला सकते हो?

ब... बांकेलाल का अपहरण?

??

Anubhav's scan

Anubhav's scan

एकाएक —

भाई पोपट, मेरे दिमाग में एक विचार आया है।

क्या?

देखो, यह तो हम जानते ही हैं कि बांकेलाल राजा विक्रमसिंह को इतना चाहता है कि वह उनके लिए अपनी जान पर भी खेल सकता है।

और इधर ठीक इसी समय दरबार जाने के लिए तैयार होता बांकेलाल सोच रहा था—

बहुत दिनों से कोई ऐसा अवसर हाथ नहीं लगा कि मैं अपने रास्ते के रोड़े यानि राजा विक्रमसिंह को रास्ते से हटाने का कोई यत्न करता।

...लेकिन मैं शीघ्र ही कोई ऐसी ठोस योजना बनाऊंगा जिससे कि...

बांकेलाल के मस्तिष्क में किसी नई शरारत के कीड़े कुलबुला ही रहे थे कि तभी—

अरे! यह क्या?

फिर बांकेलाल ने जमीन पर गिरा मुड़ा-तुड़ा कागज का टुकड़ा उठाया और खोलने लगा—

लगता तो यह कोई संदेश-पत्र ही है, लेकिन इसे किसने और क्यों फेंका है?

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

...क्योंकि तू ही वह शख्स है जिसके कारण आज मैं चक्रवर्ती राजा उधमीसिंह के बजाए सिर्फ राजा उधमीसिंह के नाम से जाना जाता हूं!...

...सिर्फ तेरे ही कारण विशालगढ़ से तिगुनी सैन्य शक्ति का स्वामी होते हुए भी मैं विशालगढ़ अपने राज्याधीन न कर सका।

क्ष...क्षमा महाराज, अब जबकि आप जान ही चुके हैं कि... विशालगढ़ की सेना आपकी सेना के मुकाबले में आधी से भी कम है तो...

...आप फिर से विशालगढ़ पर आक्रमण क्यों नहीं कर देते?

अब ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि हम राजा विक्रमासिंह से संधि कर चुके हैं। और चूंकि संधि प्रस्ताव हमारी तरफ से भेजा गया था अतः हम चाहकर भी युद्ध की पहल नहीं कर सकते हैं।

तब बांकेलाल के मस्तिष्क में एकाएक एक नई शरारत ने जन्म लिया और—

महाराज, यदि आप मेरे प्राण बख्शें तो मैं आपको ऐसा उपाय बता सकता हूं कि राजा विक्रमासिंह और आपकी सेना में निश्चित युद्ध होगा। और युद्ध की पहल भी स्वयं राजा विक्रमासिंह ही करेंगे।

??

यदि तुम्हारे उपाय से ऐसा संभव हुआ तो हम न केवल तुम्हें अभयदान देंगे बल्कि ढेर सा इनाम देंगे।

इनाम नहीं महाराज, मेरी एक शर्त है।

Anubhav's scan

क्या?

युद्ध में आपकी विजय होते ही आप विक्रमसिंह को जीवित नहीं छोड़ेंगे और उनका जीता हुआ राज्य मुझे सौंप देंगे। फिर मैं आपके प्रतिनिधि के रूप में विशालगढ़ के राजसिंहासन पर बैठूंगा।

हमें तुम्हारी शर्त मंजूर है। तुम उपाय बताओ।

तो सुनो महाराज, राजा विक्रमसिंह न केवल मेरी इज्जत करते हैं, बल्कि वह मुझे अपने से ज्यादा चाहते हैं। यदि किसी तरह से यह बात उन तक पहुंचा दी जाए कि...,

फिर बांकेलाल राजा उधमीसिंह को अपनी योजना बताने लगा। जिसे सुनते हुए उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं।

फिर पूरी योजना सुनने के बाद उधमीसिंह पोपट और चौपट से बोला—

तुम लोग विशालगढ़ जाकर बांकेलाल की योजनानुसार अपना कार्य करो।

जी, महाराज।

पोपट और चौपट के जाने के बाद—

बांकेलाल! मुझे खेद है कि जब तक तुम्हारी योजना पूर्ण रूप से सफल नहीं हो जाती, तुम्हें उसी तरह हमारा बंदी बनकर रहना पड़ेगा।

मुझे कोई आपत्ति नहीं महाराज!

विशालगढ़ का राजा बनने के लिए मैं यह कष्ट भी सहने के लिए तैयार हूं। ही-ही-ही।

Anubhav's scan

इधर पोपट और चौपट विशालगढ़ पहुंचकर बांकेलाल की योजनानुसार जगह-जगह प्रचार करने लगे —

अरे, भाई! तुमने सुना उधमपुर के राजा उधमीसिंह ने अपने बांकेलालजी का अपहरण करवा लिया है!

सुना तो मैंने भी कुछ ऐसा ही है, भइया!

???

बांकेलाल का अपहरण

क्या? बांकेलालजी का अपहरण! लेकिन उधमपुर के राजा ने ऐसा क्यों किया?

यह तो वही जाने!

???

शीघ्र ही यह खबर राजा विक्रमसिंह तक पहुंची —

महाराज की जय हो। पूरे नगर में चर्चा है कि बांकेलालजी का अपहरण हो गया।

क्या बकते हो?

महाराज, मुझे भी कुछ गड़बड़ नजर आती है, क्योंकि बांकेलाल कल से न तो राजदरबार में आए हैं, और न ही उनको कल से किसी ने देखा है।

लेकिन महामंत्रीजी, भला बांकेलाल का अपहरण कौन और क्यों करेगा?

महाराज, नगर में चर्चा है कि बांकेलाल-जी के अपहरण में उधमपुर के राजा का हाथ है।

Anubhav's scan

नहीं ऐसा नहीं हो सकता। उधमीसिंह हमारा मित्र है। वह भला ऐसा क्यों करने लगा?

महामंत्रीजी, सबसे पहले तो आप इस बात की जानकारी लें कि बांकेलाल का अपहरण हुआ है या... कहीं वह स्वयं??

जी, मैं समझ गया, महाराज!

फिर महामंत्री तुरन्त ही दरबार से निकल गया।

और फिर काफी समय बाद जब वह राज-दरबार में वापस लौटा तो —

महामंत्री, आपका परेशान चेहरा बता रहा है कि कहीं कोई गड़बड अवश्य है।

जी, महाराज! बांकेलाल का वाकई कल से कोई पता नहीं। और पूरे नगर में इस बात की चर्चा है कि उनका अपहरण हुआ है और अपहरण में उधमीसिंह का हाथ है।

ओह!

महामंत्री! फौरन ही एक दूत उधमपुर भेज दीजिए, और दूत के हाथ क्या सन्देश भेजना है यह आप खूब अच्छी तरह जानते हैं।

जी, महाराज!

Anubhav's scan

Anubhav's scan

फिर—

महाराज की जय हो। हमारे महाराज ने यह जवाब भेजा है आपके सन्देश का।

क्या? राजदूत की हत्या।

???

राजदूत! हम चाहें तो इसी समय तुम्हारी गर्दन काटकर उधमीसिंह का जवाब उन्हीं को लौटा दें, लेकिन हम जानते हैं राजदूत की हत्या पाप है...

... अतः जाकर उधमीसिंह से कहो कि वह युद्ध के लिए तैयार हो जाए।

महाराज, वे बड़े दयालु हैं। महाराज की जय हो।

दूसरे दिन ही राजा विक्रमसिंह अपनी सेना लेकर उधमपुर की ओर चल पड़ा—

Anubhav's scan

उधमपुर के राजा को तो इसी पल की प्रतीक्षा थी। जैसे ही विक्रमसिंह की सेना युद्ध के मैदान में पहुंची उधमीसिंह की सेना ने सुनियोजित ढंग से उसे तीनों ओर से घेर लिया-

उधर युद्ध की खबर चन्द्रनगढ़ के राजा चन्द्रनसिंह तक भी पहुंची —

क्या? दामाद-जी ने उधमपुर पर चढ़ाई कर दी, और हमें इस बात की खबर तक नहीं है।

सेनापति, सेना को कूच का आदेश दो। हमें तुरन्त ही दामाद विक्रम की मदद के लिए पहुंचना है।

जो आज्ञा महाराज!

और इस तरह खबर पाते ही कौशलपुर के राजा कुशलसेन भी राजा विक्रमसिंह की मदद के लिए चल पड़े—

Anubhav's scan

इधर युद्ध के मैदान में भीषण युद्ध छिड़ा हुआ था —

मारो!

काट डालो!

हिच!

आह

हाय

लेकिन चूंकि राजा विक्रमसिंह की सेना तीन तरफ से घिरी हुई थी, अतः युद्ध मेंज्यादा नुकसान उसी का हो रहा था —

किन्तु फिर भी विक्रमसिंह पूरी हिम्मत और बहादुरी से युद्ध कर रहा था—

आईई

तभी दो अलग दिशाओं से कौशलपुर और चन्दनगढ़ की सेनाएं भी उसकी मदद के लिए पहुंच गयीं—

आक्रमण!

??

आक्रमण!

Anubhav's scan

अब उधमपुर की सेना तीन राज्यों की सेनाओं के बीच घिर गयी–

मारो काटो!

मारो!

उफ! अब तो मेरी हार निश्चित ही है...!

फिर जल्दी ही उधमपुर की सेना के पांव उखड़ गये–

ओह! जान बचाकर भाग लेने में ही भलाई है।

भागो!

भागो!

अगले ही पल उधमसिंह मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ–

भागो... भागो...

इस तरह उधमपुर के राजमहल में विशालगढ़ का झंडा फहराया तब–

महामंत्री, सबसे पहले बांकेलाल की तलाश की जाए और जल्दी ही कोई शुभ सूचना हमें सुनाई पड़नी चाहिए।

जी, महाराज!

RAJ COMICS FAN NATION

BRINGING THE JANOON BACK

Anubhav's scan

उधमपुर के राजमहल में कुछ देर तलाश करने के बाद—

अरे! यह तो किसी गुप्त तहखाने का मार्ग समझ में आ रहा है।

धड़

फिर—

हुजूर, वह देखिए बांकेलालजी!

!?

अरे! यह महामंत्री का बच्चा यहां तक कैसे पहुंच गया? हो न हो मेरी पोल खुल चुकी है।

सैनिको, जल्दी से बांकेलालजी को बंधन से मुक्त करो।

म... महामंत्री जी, मुझे क्षमा कर दें... व... वो राजा उधमीसिंह ज... जी...

घबराइये नहीं बांकेलालजी अब उधमीसिंह आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।...

क्योंकि राजा विक्रमसिंह ने युद्ध में उन्हें परास्त कर दिया है, और वह अपना राज-पाट छोड़कर भाग गये हैं। और अब यह राज्य हमारे राज्याधीन है।

??

Anubhav's scan

इधर युद्ध के मैदान से भागा राजा उधमीसिंह एक निर्जन जंगल में पहुंचा तो मारे भूख के उसका बुरा हाल था—

उफ! यह मैंने क्या मूर्खता कर दी। वह कौन सी अशुभ घड़ी थी जब मैंने राजा विक्रमसिंह से टकराने की सोची थी। हे भगवान? अब क्या होगा? मैं कहां जाऊं, क्या करूं?

इसी तरह के कई प्रश्न मन में लिए वह जंगल में भटक ही रहा था कि तभी—

अरे! इस बियाबान जंगल में इतना शानदार महल। भला किसका महल हो सकता है यह? चलकर देखें शायद यहां पेट भरने के लिए भोजन-पानी की कुछ व्यवस्था हो जाए।

फिर जैसे ही वह महल के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो—

???

कौन है तू? और जादूगर डांगा के इलाके में प्रवेश करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?

मेरा नाम उधमीसिंह है, मैं अब से कुछ समय पहले उधमपुर का राजा था, लेकिन...

हूं...। ठीक है अन्दर चल।

उधमीसिंह ने अपनी सारी राम कहानी कह सुनाई।

Anubhav's scan

अन्दर ले जाकर जादूगर डांगा ने पहले उधमीसिंह को भोजन कराया—

फिर —

अब बोलो राजन! मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?

जादूगर डांगा, तुम मेरी मदद क्या... हां यदि तुम अपनी जादुई शक्ति के बल पर उस कमीने बांकेलाल को यहां बुलवा दो तो मैं तुम्हारा एहसानमंद हूंगा...

... क्योंकि उस कमीने के कारण ही मुझे अपना राज-पाट खोना पड़ा है। उस कमीने को जान से मारने के बाद ही मेरे मन को शान्ति मिलेगी।

ठीक है मैं अभी तुम्हारे वांछित व्यक्ति बांकेलाल को तुम्हारे सामने हाजिर करता हूं।

फिर जादूगर उसी कमरे के एक कोने में मेज पर पड़ी एक खोपड़ी के पास पहुंचा और मन ही मन कुछ मंत्र बुदबुदाने के बाद बोला —

ऐ शैतान की खोपड़ी! इस राजा के दिलो-दिमाग पर बसी बांकेलाल नाम के इन्सान की तस्वीर दिखा और फिर मुझे दिखा, वह इंसान इस समय कहां है, और क्या कर रहा है?

जो हुक्म मेरे आका!

Anubhav's scan

तुरन्त ही उस खोपड़ी का विकराल मुंह खुला और पहले उसमें उधमपुर के राजमहल का बाहरी दृश्य उभरा...

यह तो मेरे राजमहल का दृश्य है।

...फिर—

आका! यही वह बांकेलाल है जिसकी तस्वीर सामने खड़े राजा के दिलो दिमाग पर अंकित है।

खुररर्र खुर्र

क्यों राजन, यही बांकेलाल है न?

हां! यही है वह पाजी।

तब एक बार फिर से जादूगर डांगा म
ही मन कोई मंत्र बुदबुदाने लगा—

?

उधर गहरी नींद में सोए बांकेलाल का बदन एकाएक ऐंठने लगा और उसकी नींद भी खुल गयी—

यह क्या? मेरा बदन क्यों ऐंठ रहा है... हाय!

तभी—

अरे! यह क्या? लोभा मरने के बाद पशु-पक्षियों की योनि में आते हैं और मैं जीवित ही तोते की योनि में कैसे आ गया?

Anubhav's scan

Anubhav's scan

Anubhav's scan

...जिसे सुनकर उधमीसिंह की आंखें भयानक अन्दाज में चमकने लगीं—

क्या ऐसा संभव है, जादूगर डांगा?

अवश्य सम्भव है राजन! लेकिन आपकी मदद सिर्फ इसी शर्त पर कर सकता हूं कि राजा बनते ही आपको भी मेरी मदद करनी होगी।

मैं तुम्हारी हर तरह की मदद करने के लिए वचन देता हूं। बस, तुम बांकेलाल की योजनानुसार मेरी मदद कर दो।

अवश्य राजन!

चलो बेटा बांके! फिलहाल तो जान बची। आगे देखो होता है क्या?

तब—

ऐ शैतान की खोपड़ी। मुझे इस राजा के दिलो-दिमाग में बसी राजा विक्रमसिंह की तस्वीर दिखा।

जो हुक्म मेरे आका!

!?

अगले ही पल—

आका, यही है विशालगढ़ का राजा विक्रमसिंह।

हूं!

फिर जादूगर ने मन ही मन कोई मंत्र पढ़ा तो—

वाह! चमत्कार हो गया। अब आपकी शक्लो-सूरत हू-बहू राजा विक्रमसिंह से मिलती है।

!?

Anubhav's scan

फिर उधमीसिंह ने आइने में अपनी बदली हुई सूरत देखी और सन्तुष्ट पूर्ण ढंग से सिर हिलाता हुआ बोला –

हूं... तो बांकेलाल, अब अपनी योजनानुसार अगला कदम तुम्हें उठाना है।

जी, मैं तैयार हूं।

फिर बांकेलाल उसी रात उधमपुर के राजमहल में पहुंचा और चुपचाप अपने शयनकक्ष में जाकर सो गया –

खर्र-खर्र

और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही वह राजा विक्रमसिंह के शयनकक्ष पहुंचा –

आओ, आओ बांकेलाल! सुबह-सवेरे कैसे आना हुआ?

महाराज! मैंने सोचा क्यों न आज सुबह की सैर पर चला जाए।

हां-हां क्यों नहीं, कहते हैं सुबह की सैर से सेहत ठीक रहती है। हम भी तुम्हारे साथ सैर करने चलेंगे।

जी।

वाह! बन गया काम।

फिर दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर सैर के लिए निकल पड़े –

इस मूर्ख को पता

नहीं कि यह सुबह की सैर के लिए नहीं, बल्कि मौत के मुंह में जा रहा है।

Anubhav's scan

काफी देर घूमने के बाद-

बांकेलाल, मेरे ख्याल से काफी सैर हो चुकी है। अब वापस लौटा जाय।

बस महाराज, आगे घना जंगल है, जब इतनी दूर आ ही गये हैं तो क्यों न लगे हाथ शिकार का भी आनन्द लिया जाय?

जैसी तुम्हारी इच्छा बांकेलाल।

पहले सैर, फिर शिकार... लगता है इसके पीछे कोई उद्देश्य है बांकेलाल का। और यह भी तय है कि बांकेलाल जो कुछ भी कर रहा है या करेगा उसमें मेरी ही भलाई होगी।

फिर-

अरे! बांकेलाल देखो, इस बियाबान जंगल में इतना सुन्दर महल!

हां महाराज! आइये, देखें तो भला इस सुन्दर महल का स्वामी कौन है।

अगले ही पल-

आश्चर्य है। यह तो हमारे राजमहल से भी सुन्दर व भव्य है।

Anubhav's scan

फिर जैसे ही उन दोनों ने महल में प्रवेश किया तो —

आओ-आओ! राजा विक्रमसिंह.

आखिर तुम फंस ही गये न, बांकेलाल के जाल में। हा-हा-हा।

??

बांकेलाल! यह मेरा हमशक्ल कौन है? और यह सब क्या चक्कर है?

यह सारा चक्कर हम तुम्हें समझाते हैं, विक्रमसिंह!

ये तेरा हमशक्ल और कोई नहीं, बल्कि उधमपुर का राजा उधमीसिंह है जिसे मैंने अपने मंत्र बल पर तेरा हमशक्ल बना दिया है...

...और अब हम तुझे मार देंगे, फिर तुम्हारे रूप में तुम्हारी जगह राजा उधमीसिंह विशालगढ़ और उधमपुर के राजा होंगे हा-हा-हा।

और तुम्हारे षड्यंत्र में बांकेलाल भी शामिल है।

महाराज! मौके का फायदा तो हर इन्सान को उठाना ही चाहिए ही-ही-ही।

Anubhav's scan

पाजी, नमक हराम! तूने मेरे साथ विश्वासघात किया है। मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा।

लेकिन इससे पहले कि वह बांके पर वार करे कि तभी जादूगर के इशारे पर मानव खोपड़ी से रोशनी की एक किरण निकली और—

चलाक!

आह!

तब—

अब तू मरने के लिए तैयार हो जा विक्रमसिंह!

वहरो महाराज!

??

महाराज, फिलहाल आप विक्रमसिंह का वध न करें, क्योंकि आपने इसकी शक्ति-सूरत तो पा ली है, लेकिन अभी आप इसके सारे कार्य-कलापों व रहस्यों से परिचित नहीं हैं।

जिनको कि जानना आपके लिए जरूरी है ताकि किसी नाजुक अवसर पर आपका भेद न खुल सके।

हूं, लेकिन यह हमें अपने जीवन के सारे रहस्यों से परिचित ही क्यों करवाएगा।

महाराज, क्यों न फिलहाल इसे यहीं जादूगर के महल में कैद रखवा जाए, और आप चलकर उधमपुर और विशालगढ़ का राजकार्य देखें। और यदि किसी अवसर पर कोई ऐसी बात फंसती है...

Anubhav's scan

Anubhav's scan

और अभी इन नारों की ध्वनि कुछ कम हुई ही थी कि तभी —

द्रुपट विक्रमसिंह! मैं आ गया हूं तेरी मौत बनकर।

!!!

???

!!!

तुम कौन हो तपस्वी युवक? और क्या चाहते हो?

विक्रमासिंह, मैं तेरी मौत हूं, और तुझे मारने के लिए ही यहां आया हूं।

लेकिन क्यों?

विक्रमासिंह! आज से दस वर्ष पूर्व तूने मेरे बापू को चोरी के झूठे आरोप में बीस कोड़ों की सजा दी थी। मेरा बापू कोड़ों की मार सह न सका और उसने दम तोड़ दिया था...

...और तभी मैंने तुझ से बदला लेने की कसम खाई थी। फिर मैंने दस वर्षों तक महादेवी की तपस्या करके उनसे यह अमोघ-अस्त्र प्राप्त किया...

...इसका वार कभी खाली नहीं जाता। अतः अब तू मरने के लिए तैयार हो जा।

कहने के साथ ही तपस्वी से दिखने वाले युवक ने अमोघ-अस्त्र विक्रमसिंह का वेष धरे उधमीसिंह पर फेंक मारा —

आह!

सचाक

उफ!

!!!

Anubhav's scan

Anubhav's scan

...युद्ध में पराजित होने के बाद उधमीसिंह किसी तरह जादूगर डांगा के पास पहुंचा और फिर उसकी मदद से इसने मुझे तोता बनवाकर मेरा अपहरण करवा दिया...

...लेकिन तोते के रूप में मैं जब जादूगर की तंत्र शक्ति से जादूगर के महल की ओर खिंचा जा रहा था तो रास्ते में...

वत्स, मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हुई। वर मांगो।

महादेवी! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसा अस्त्र दें जिसका वार कभी खाली न जाए और मैं अपने दुश्मन राजा विक्रमासिंह का अंत कर सकूं।

...तब...

यह लो वत्स, इस अमोघ-शस्त्र का वार कभी खाली नहीं जाता, लेकिन यह अस्त्र तुम सिर्फ एक ही बार प्रयोग कर सकते हो।

महादेवी मेरा सिर्फ एक ही दुश्मन है, मुझे इसके दुबारा प्रयोग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

उफ! तो इसका मतलब मेरे अन्नदाता के प्राण खतरे में हैं। कैसे बचाऊं मैं राजा विक्रमासिंह के प्राण?

...फिर जादूगर के महल पहुंचने पर जब मैंने जाना कि जादूगर अपनी मंत्रविद्या द्वारा किसी भी व्यक्ति को किसी भी रूप में बदल सकता है, तब मैंने आपके दुश्मन उधमीसिंह को आपकी जगह तपस्वी युवक के हाथों मरवाने के लिए यह योजना बनाई थी।

त... तो क्या तुमने मेरे प्राण बचाने के लिए यह सब किया?

जीहां, महाराज! आप तो जानते हैं कि मैं सपने में भी आपका बुरा नहीं सोच सकता हूं।

उफ! बांकेलाल, तुम कितने महान इन्सान हो। और अन्जाने में तुम्हें गलत समझकर कितना भला-बुरा कह बैठा।

Anubhav's scan

लेकिन महाराज, आप जादूगर डांगा की कैद से निकलने में कैसे कामयाब हुए?

अरे, उसकी कैद से निकलना मेरे लिये कोई मुश्किल काम साबित नहीं हुआ...

...मुझे सन्देह हुआ कि उस जादूगर की जान इस खोपड़ी में है। अवसर पाते ही मैंने उस खोपड़ी पर प्रहार कर दिया। खोपड़ी के दो टुकड़े होते ही सचमुच जादूगर भी मर गया और मैं भागकर यहां आ गया।

पूरी कहानी समझ में आते ही दरबार में उपस्थित दरबारी व मंत्रीगण बांकेलाल को प्रशंसात्मक दृष्टि से देखने लगे—

वाह! कितनी बुद्धिमता से बांकेलाल जीने न केवल महाराज की जान बचाई, बल्कि उनके शत्रु को भी हमेशा-हमेशा के लिए उनके रास्ते से हटा दिया।

वाकई! बांकेलाल-जी असाधारण बुद्धिमान हैं।

चलो जान तो बची, लेकिन हर बार की तरह किस्मत ने फिर मेरे साथ मजाक किया है। काश! मुझे पहले ही पता होता कि कोई राजा...

...विक्रमसिंह की जान के पीछे हाथ धोकर पड़ा है तो, मैं कतई कोई योजना न बनाता।

समाप्त

Sarfaroshi Ki Tamanna...Ab Hamare Dil me hai...dekhna hai zor kitna...bazuye katil me hai!

MUMBAI

26/11

THE SPIRIT WONT DIE...